REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

जनजातीय समुदाय की समस्याएँ और मीडिया

अमिता
सहायक प्राध्यापक , पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

प्रस्तावना :–

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के मजबूत संचालन के लिये पंचशील सिद्धांत दिया गया था। यह अपेक्षाकृत अज्ञात ही है कि नेहरू जी द्वारा आदिवासी व जनजातीय लोगों के विकास के लिये एक महत्वपूर्ण ढांचा विकसित करने के उद्धेश्य से पाँच मूलभूत सिद्धांतों का एक और सेट भी तैयार किया गया था। नेहरूवादी दृष्टि में आदिवासियों के विकास के लिये उनकी भूमि व अधिकारों को पूर्ण सम्मान देना आवश्यक है। इसके अनुसार गैर–जनजातीय लोगों की सोच को जनजातीय तबके के लोगों पर लागू करना बिल्कुल गलत है। आज जनजातीय समुदाय भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग नामों से मौजूद है। इन समुदायों की अपनी विशिष्ट संस्कृति, भौगोलिक भू–भाग व अलग जीवन शैली है। ये जनजातीय समुदाय आज भी शिकार पर निर्भरता, जंगलों से भोजन एकत्रीकरण, कृषि की पुरानी तकनीक, जनसंख्या में नकारात्मक वृद्धि, शैक्षणिक स्तर में कमी आदि समस्याओं का सामना करना रहे हैं। देश की आजादी के बाद केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा जनजातीय समुदायों के विकास व इनकी समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न योजनाओं द्वारा प्रयास भी किये गये हैं। संवैधानिक प्रावधानों, जनजातीय आयोग की स्थापना, जनजातियों को विशेष आरक्षण सुविधा, विशेष विकास निधि का प्रावधान इस विषय में सरकार द्वारा उठाये गये महत्वपूर्ण कदम हैं। परन्तु आज के उदारीकरण, निजीकरण व भूमंडलीकरण के इस दौर में जनजातीय समुदायों का विकास के नाम पर जो शोषण व विस्थापन किया जा रहा है, वह बहुत ही चिंतनीय है। विभिन्न मीडिया माध्यमों द्वारा समय–समय पर इन समुदायों से संबंधित समस्याओं को उठाया जाता रहा है, साथ ही सरकार द्वारा इनके कल्याण हेतु बनायी गयी योजनाओं की जानकारी व्यापक रूप से मीडिया माध्यमों द्वारा आमजन तक पंहुचायी जाती रही है, फिर भी ये समुदाय अपने हक व अधिकारों से काफी दूर दिखाई देते हैं। ये अपने विकास, अपनी जीवनचर्या की मूलभूत आवश्यकताओं संबंधी जानकारी, स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, सर्वांगीण विकासात्मक शिक्षा से संबंधित जानकारी से आज भी कोसों दूर हैं। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुये यूनेस्को द्वारा दूर–दराज/सुदूर स्थित स्थानों में रहने वाले इन जनजातीय समूहों (कबीलों) के विकास हेतु जो सामुदायिक रेडियों माध्यमों का प्रयोग किया गया है, उन्हीं का शोध में अध्ययन करना एवं पता लगाना है, कि उन माध्यमों द्वारा किस–किस प्रकार के कार्यक्रम तैयार कर लोगों तक जानकारी पंहुचाई गई है। इस शोध पत्र में जनजातीय समुदाय के समक्ष उत्पन्न समस्याएँ व वर्तमान परिदृश्य में उन समस्याओं को दूर करने में सरकार की क्या महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है, पर प्रकाश डाला गया है।

VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

सामुदायिक रेडियों के माध्यम से जानकारी प्राप्त करता हुआ जनजातीय समुदाय

परिचय :–

हमारे देश में 700 से ज्यादा जनजातीय समुदाय मौजूद है, जो कि देश के लगभग 17 से अधिक राज्यों में विद्यमान है। जनजातीय समुदाय देश की कुल जनसंख्या में से लगभग 8.6: जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये देश के लगभग 15: से अधिक भू–भाग पर मौजूद है। इन समुदायों की अपनी एक विशिष्ट भाषा, संस्कृति, जीवनशैली व क्रिया–कलाप होते हैं। आज भी ये जनजातीय समुदाय शिकार, पशुपालन, धूमंतू कृषि, गैर–लकड़ी वनोत्पाद, कारीगरी पर अपनी आजीविका हेतु निर्भर है। भारत में कई जनजातीय समुदाय उपस्थित है, जिनमें प्रमुख रूप से भील, खासी, सहरिया, गोंड इत्यादि है।

औपनिवेशिक काल इन जनजातीय समुदायों के लिये बहुत खराब रहा। इन्हें भूमि, जंगल व प्राकृतिक संसाधनों पर इनके पारंपरिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया। भारतीय वन अधिनियम, 1927 के अंर्तगत ऐसी कोई भी भूमि, जिसका कोई कानूनी दस्तावेज नहीं है, को सरकार द्वारा अधिग्रहित किया जा सकता है, के द्वारा इनके बड़े भू–भाग पर तत्कालीन शासकों द्वारा आधिपत्य कर इन्हें वहाँ से विस्थापित कर दिया गया। भूमि अधिग्रहण अधिनियम, 1894 द्वारा भी सरकार सार्वजनिक उद्धेश्य हेतु किसी भी भूमि को अधिग्रहित कर सकती थी।

विभिन्न विकास परियोजनाओं जैसे :– नये उद्योगों की स्थापना, खनन संचालन, बड़े बांधों का निर्माण आदि के नाम पर लगभग 01 करोड़ से अधिक जनजातीय लोगों का विस्थापन उनके मूल स्थान से कर दिया गया। समयानुरूप सरकार द्वारा इन समुदायों के अधिकारों की रक्षा हेतु विभिन्न कदम भी उठाये गये हैं, जिससे कि इन जनजातीय समुदायों के अस्तित्व को बचाये रखते हुये इन्हें भी विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सकें।

जनजातीय समुदाय के समक्ष समस्याएँ :–

विकास के इस दौर में जनजातीय समुदायों के समक्ष कई समस्याएँ खड़ी है, जो कि इनके अस्तित्व के लिये ही खतरा बन चुकी है। इनमें से कुछ समस्याएँ निम्न है :–

• सामाजिक परिस्थितियाँ व कम होती जनसंख्या

जनजातीय समुदाय की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति विद्यमान होती है, जिसके अन्तर्गत इनका सामाजिक ढ़ाँचा बना होता है। इनके स्वयं की एक बोली और जीवन जीने की कला होती है। आज भी देखा जाये तो ये अपनी आजीविका हेतु भूमि एवं वन पर पूर्णतया निर्भर है। जैसे–जैसे विकास कार्यो हेतु पीपीपी मॉडल पर इनकी भूमि को अवाप्त करने का कार्य जोर–शोर से बढ़ता जा रहा है, वैसे–वैसे इनके समक्ष सबसे बड़ी समस्या तो आजीविका अर्जन करने की उत्पन्न होती जा रही है। अंडमान–निकोबार को उदाहरण के रूप में रखते हुये हम इस बिन्दू को और अधिक अच्छी तरह समझ सकते हैं। अंडमान–निकोबार में विकास व पर्यटन को बढ़ावा देने हेतू सरकार द्वारा जनजातीय समुदायों की भूमि को अवाप्त किया गया, जिसके फलस्वरूप वहाँ मौजूद

'जारवा' जनजाति का अस्तित्व ही खतरे में पहुँच गया है व आज यह जनजाति लुप्त होने के कगार पर पहुँच गयी है। अगर विश्लेषणात्मक रूप में देखें तो पिछले कुछ दशकों से इन जनजातीय लोगों की जनसंख्या में बहुत कमी आयी है।

• भूमि अधिग्रहण की समस्या

चूंकि जनजातीय समुदाय प्राथमिक रूप से स्थानांतरित कृषि व वनोत्पाद पर निर्भर रहते हैं। औद्योगीकरण व नगरीकरण के कारण इन वनों के क्षेत्रफल में लगातार गिरावट हो रही है। इन समुदाय के क्षेत्रों में भूमि अधिग्रहण बिल का कहीं न कहीं गलत फायदा उठाकर भी व्यवसायी वर्ग अपने आर्थिक हितों की पूर्ति हेतु इनकी भूमि का निरंतर अधिग्रहण करता जा रहा है। इस भूमि की समस्या के चलते इन्हें मजबूरन होकर विस्थापन करना पड़ रहा है, जिससे कि इन क्षेत्रों में मौजूद प्राकृतिक संसाधनों का व्यवसायी वर्ग द्वारा अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। इन सबके कारण जनजातीय समुदायों का पारिस्थितिकी व प्राकृतिक जीवन चक्र बहुत बुरी तरह प्रभावित हो रहा है।

• सांस्कृतिक समस्याएँ

जनजातीय समुदाय एक जातीय नैसर्गिक विचारधारा की अवधारणा को मान्यता देता है। ये मानते है कि अन्य संस्कृति को अपनाने से इनकी स्वयं की संस्कृति खराब हो जायेगी। इस कारण ये नयी संस्कृति का पुरजोर विरोध करते हैं व अपनी प्राचीन संस्कृति के अनुसार ही जीवन जीने का समर्थन करते हैं। इन समुदाय विशेष के क्षेत्र में पिछले दशकों में धार्मिक समस्याओं ने भी जन्म लिया है। ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा इनके क्षेत्रों में जबरन धर्म परिवर्तन भी कराया गया, जिससे कि इन समुदायों में एक भय व्याप्त हो गया व ये मुख्यधारा से अपने आप को दूर करते चले गये।

• गरीबी स्तर में वृद्धि व शिक्षा की कमी

आज भी देश की अधिकांश जनजातियाँ गरीबी रेखा के नीचे (ठच्स्) रह रही है। गरीबी की मुख्य वजह शिक्षा में कमी को माना जा सकता है। चूंकि इनकी आजीविका के साधन दिन–प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं, ऐसे में ये अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला पाने में असमर्थ साबित हो रहे हैं। जनजातीय क्षेत्रों में आज भी शैक्षणिक मूलभूत ढ़ाँचें का अभाव है, इन क्षेत्रों में विद्यालयों का निर्माण नहीं हो पाया है, शिक्षक इन क्षेत्रों में जाकर शिक्षा नहीं देना चाहते हैं, व्यवसायी वर्ग जिनके लिये आर्थिक हित सर्वोपरि है, वे भी नहीं चाहते हैं कि इन समुदायों के लोग अच्छी शिक्षा प्राप्त कर मुख्यधारा से जुड़े, क्योंकि अगर वे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर लेंगे तो वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो जायेंगे, इससे उनके आर्थिक लाभों पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। जनजातीय समुदायों की पुरानी मानसिकता, पितृसत्तात्मक समाज, परिवहन सुविधाओं का नितांत अभाव आदि भी कारण है, जो कि इनकी शिक्षा स्तर में कमी के सहायक हैं। इसके अतिरिक्त इन समुदायों में अंधविश्वास व मिथक मौजूद हैं, जिसके कारण ये औपचारिक शिक्षा से नहीं जुड़ पा रहे हैं। इसी कारण ये स्वयं निर्भर बनने में असक्षम हो गये हैं, जो कि इनकी कमजोर आर्थिक स्थिति के लिये जिम्मेदार है।

• महिलाओं व बच्चों की समस्या एवं उनका शोषण

जनजातीय समाज एक पितृसत्तात्मक समाज है। इनमें स्पष्ट श्रम विभाजन देखा जाता है। पुरूष जहाँ परिवार के मुखिया होते हैं एवं आजीविका अर्जन हेतु कार्य करते हैं, वहीं महिलाएँ परिवार को बढ़ाने वाली व बच्चों के लालन–पालन का कार्य करती है। इन समुदायों में लैंगिक असमानता बहुत उच्च स्तर पर पायी जाती है। कुछ समुदायों में तो पुरूष एक से अधिक पत्नियाँ भी रखते हैं। जनजातीय समुदायों द्वारा बच्चों के जन्म को भगवान का उपहार समझा जाता है, जिस कारण इन दंपत्तियों के बच्चों की संख्या अधिक होती है। जिसके फलस्वरूप बच्चे भी अपने बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित रह जाते है। उन्हें भी बचपन से समुदाय की रीतियों के अनुसार माता–पिता के साथ इनके कार्यो में शामिल होना पड़ता है। इस तरह से न तो उन्हें शिक्षा मिल पाती है और न हीं अच्छा जीवन जीने का वातावरण विकास के इस समय में कुछ निजी हित वाले लोग इन

जनजातीय समुदायों की गरीबी व अशिक्षा का फायदा उठाते हुये इन्हें लालच देकर महिलाओं व बच्चों का व्यापार करने लग जाते हैं। जहाँ महिलाओं को जबरन वेश्यावृत्ति में धकेल दिया जाता है, वही बच्चों को बाल श्रम में।

• प्रशासनिक व सरकारी समस्याएँ

जब से देश आजाद हुआ है, हमारे देश की सरकार ने आदिवासी जनजातीय समुदायों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिये सरकारी स्तर पर कई प्रयास किये हैं। लेकिन अभी तक भी ये सारे प्रयास पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाये हैं। इसका एक कारण यह नजर आता है कि आदिवासी क्षेत्र शहर से दूर–दराज होते हैं व वहाँ पर बुनियादी सुविधाओं का नितान्त अभाव होता है, जिसके कारण सरकारी अधिकारी व कर्मचारी रिमोट आदिवासी क्षेत्रों में अपनी पोस्टिंग लेकर जाने से बचते हैं। इसके फलस्वरूप सरकारी योजनाओं व विकासात्मक नीतियों का जमीनी क्रियान्वयन पूर्णरूप से सफलतापूर्वक नहीं हो पाता है।

• एन.जी.ओ. (छळ८) व सामाजिक सुधारकों का आदिवासी जनजातीय समुदाय के प्रति उदासीन रवैया

देश में आज हजारों छळ८ कार्य कर रहें है, जो कि देश के अलग–अलग कोनों में विभिन्न समुदायों के लिये विकासात्मक कार्यो में अपना योगदान दे रहे हैं। परन्तु अगर हम इसका गहरा अध्ययन करते हैं, तो हम पाते हैं कि रिमोट आदिवासी जनजातीय समुदायों में कार्य करने वाले छळ८ व सामाजिक सुधारकों की संख्या चंद ही है। ये छळ८ व सामाजिक सुधारक भी आदिवासी जनजातीय समुदाय को विकासात्मक गतिविधियों में बेहद कम रूचि ले रहे हैं।

• मीडिया माध्यमों का उदासीन रवैया

मीडिया के विभिन्न माध्यमों द्वारा इन जनजातियों के विकास हेतु जागरूकतारूपी कार्यक्रमों की भारी कमी दिखती है। जहां मुख्यधारा के समाज को आकर्षित करने वाले विभिन्न जायकेदार कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है, वहीं हाशिये पर पड़े इन समुदायों का स्थान इन मीडिया माध्यमों में नगण्य मात्र होता है और वो भी सिर्फ अतिआवश्यक होने की स्थिति में ही। उनकी भिन्न–भिन्न प्रकार की समस्याओं, तरह–तरह की परेशानियों व अहम जरूरतों के लिये न तो जगह होती है और न हीं अहमियत। आमतौर पर उनकी चर्चा कुछ विशेष अवसरों पर ही की जाती है ताकि उनके मुद्दों को भुनाते हुये अपने हितों की पूर्ति की जा सकें।

भारतीय जनजातीय समुदाय की समस्याओं के समाधान के उपाय :–

आज के वैश्वीकरण के दौर में यह बेहद आवश्यक हो गया है कि आदिवासी व जनजातीय समुदाय को समाज की मुख्यधारा से जोड़कर उन्हें भी विकास के पथ पर अग्रसर किया जाये। जनजातीय समुदाय के समग्र विकास के लिये देश व समाज के सभी कारको को इनकी विकास प्रक्रिया में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना होगा। इनकी समस्याओं के समाधान हेतु कई उपायों पर हम आगे चर्चा कर रहे हैं।

• जनजातीय समुदाय केन्द्रित सरकारी योजनाओं का निर्माण व क्रियान्वयन

सरकार को जनजातीय समुदाय केन्द्रित सरकारी योजनाएँ बनाकर उनके सख्त क्रियान्वयन के लिये कटिबद्ध होना पडेगा। सरकारी अधिकारी व कर्मचारी को इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु प्रेरित करना होगा। योजनाओं के पूर्ण निरीक्षण हेतु तंत्र स्थापित करके इन योजनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार को समूल खत्म करना होगा। साथ ही सरकार को यह भी ध्यान देना होगा कि ये सभी योजनाएँ संविधान के अनुरूप व लोकतांत्रिक मूल्यों को सहेजने वाली हो।

VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

• जनजातीय समुदाय में शिक्षा का विस्तार

आज भी शिक्षा की कमी जनजातीय समाज के विकास में प्रमुख रूप से बाधक बनी हुयी है। अतः शिक्षा के विस्तार के लिये सरकारी एवं गैर–सरकारी, दोनों तरह के संस्थानों की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बनती है। इसके लिये इन दोनों तरह के संस्थानों को मिलकर इन समुदायों के शैक्षिक वातावरण को प्रोत्साहन देना चाहिये। शिक्षा के प्रति जागरूकता, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएँ व पुरूस्कार आदि द्वारा इन समुदायों को शिक्षा के लिये आकर्षित किया जा सकता है। जब इन समुदायों में शिक्षा का विस्तार होता जायेगा, तब इनकी सांस्कृतिक समस्याओं का निराकरण भी होता चला जायेगा। वे स्वयं अपने को उन गतिविधियों में शामिल करना शुरू कर देंगे, जिनके माध्यम से उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति उन्नत हो सकें।

• महिलाओं व बच्चों के विकास पर विशेष ध्यान

जनजातीय समुदाय के पितृसत्तात्मक होने के कारण इनमें महिलाओं व बच्चों की स्थिति बेहद ही निम्न रहती है। इन्हें बुनियादी अधिकार भी नहीं मिल पाते हैं। अतः छळ व सरकारी प्रयासों द्वारा इन समुदायों के महिलाओं व बच्चों को बुनियादी अधिकार दिलवाने व उनके विकास के लिये कार्य किया जाना चाहिये। महिलाओं व बच्चों के शोषण को रोकने हेतु कड़े व सख्त नियम बनाने चाहिये।

• आदिवासी क्षेत्रों व जनजातीय समुदायों की विभिन्न समस्याओं का उन्मूलन

जनजातीय समुदायों के क्षेत्रों में आज नक्सलवाद की बड़ी समस्या पैठ बनाये हुये है। इस समस्या के चलते इनके क्षेत्रों में विकासात्मक कार्य ठप्प पड़े हुये है। अतः इन क्षेत्रों में नक्सलवाद का समूल विनाश करना ही होगा। साथ ही भूमि अधिग्रहण संबंध में भी सरकार को जनजातीय समुदाय की समस्याओं को ध्यान में रखकर नियम बनाने चाहिए। भूमि अधिग्रहण में जनजातीय समुदाय के हितों की पूर्ण रक्षा की जाना चाहिये।

• जनजाति समुदाय की समस्या निराकरण में मीडिया की पहल

इनकी समस्याएँ दूर करने हेतु मुख्य मीडिया माध्यमों की यह अहम जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन बेहतर ढंग से करें। इन्हीं समस्याओं को दृष्टिगत करते हुये यूनेस्को ने अपने भिन्न–भिन्न प्रोजेक्ट्स के माध्यम से मुख्यतया सामुदायिक रेडियों की अवधारणा के माध्यम से उनके विकास हेतु प्रमुख रूप से कई कार्य किये है। यहां इनकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य उस स्थान विशेष में फ्रीक्वेन्सी सेट–अप स्थापित करके एक छोटी से छोटी ईकाई तक पंहुच बनाकर उनकी जरूरतानुसार कार्यक्रमों का निर्माण, निर्धारण व प्रसारण किया जाता है, जिसके अन्तर्गत अलग–अलग कार्यक्रमों द्वारा बच्चों में स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, बेहतर खान–पान, मौसमी बदलाव व घरेलू रख–रखाव, समयानुसार टीकाकरण, महिलाओं की समस्याओं से संबंधित जानकारी, विषय विशेषज्ञों की राय, सरकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी काफी मनोरंजनात्मक तरीके व आम बोल–चाल की भाषा में दी जाती है, ताकि श्रोतागण अपने मनोरंजन के साथ–साथ अपनी जरूरत की जानकारियां भी आसानी से गृहण कर सकें। इन कार्यक्रमों की प्रस्तुति के लिये पात्र भी वहां के जनसाधारण के मध्य से ही लिये जाते हैं, ताकि वहां के समुदायों को आसानी से कार्यक्रमों के साथ जोड़ा जा सकें। पात्रों के नामों का निर्धारण भी इन्हीं आधारों पर किया जाता है।

निष्कर्ष :–

भारतीय संविधान की 5वीं व 6ठीं अनुसूची आदिवासी व जनजातीय समुदायों को उनकी जमीन पर अधिकार की एतिहासिक गारंटी प्रदान करती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–15(4), अनुच्छेद–23, अनुच्छेद–46, अनुच्छेद–330, अनुच्छेद–332, अनुच्छेद–339(1) द्वारा जनजातीय समुदायों के अधिकारों की सुरक्षा की गयी है। भारत सरकार विभिन्न योजनाओं का प्रमुख केन्द्रण जनजातीय समुदाय पर कर रही है। साथ ही इन योजनाओं के समग्र पालन हेतु मॉनिटरिंग तंत्र भी शुरू किया गया है। इन योजनाओं में वनबंधु, कल्याण योजना, प्री–मैट्रिक स्कॉलरशिप, ज्योति ग्राम योजना, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, 20 अंक कार्यक्रम आदि प्रमुख है। मीडिया के विभिन्न माध्यमों जिसमें विशेषतौर पर सामुदायिक रेडियो माध्यम द्वारा जनजातीय

सामुदायों तक महत्वपूर्ण जानकारियां पंहुचायी जा रही है, ताकि उन्हें समय पर सूचना देकर जागरूक किया जा सकें। अतः यहां मीडिया के माध्यम अपना कार्य बखूबी निभाते हुये प्रतीत हो रहे हैं। अतः सरकारी व गैर सरकारी दोनों तंत्रों को जनजातीय समुदायों की समस्याओं के उन्मूलन के लिये कटिबद्ध होना होगा, जिससे कि इनका चहुँमुखी विकास हो सकें।

संदर्भ सूची

1. वेंकट राव पी. (2001), जर्नल फॉर रूरल डेवलपमेंट, 20(1), पी.पी. 88–89
2. वॉरियर एलविन (1963), ए न्यू डील फॉर ट्राइबल इंडिया, न्यू दिल्ली (1957)
3. बोस, एन.के. 1971, भारत में जनजातीय जीवन, नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट
4. डॉ. प्रकाश चन्द्र मेहता, ट्राइबल डेवलपमेन्ट इन 20जी सेन्चुरी, शिवा पब्लिशर्स, उदयपुर (2000)
5. आर.एन. ठाकुर, ट्राइबल डेवलपमेन्ट नीड फॉर ए फ्रेश प्रेस्पेक्टिव, कुरूक्षेत्र (1997)